अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका

श्रावण अंजोरिया 2060 विक्रमी / अगस्त 2003 ईस्वी साल:1 अंक:1

एह अंक में :

सम्पादक के आलेख	डा. राजेन्द्र भारती	2
कुछ समसामयिक दोहा	मुफलिस	3
नीमिया रे करूवाइन	डा.जनार्दन राय	4
झरताटे चानी के फुहार	बद्री नारायण तिवारी शाण्डिल्य	6
फूलमतिया फूआ	देवकुमार सिंह	7
दुख से मुक्ति	लल्लन प्रसाद पाण्डेय	11
आंखि भइल सावन	डॉ0 आद्याप्रसाद द्विवेदी	12

आलेख

भोजपुरी: एगो परिचय

डा. राजेन्द्र भारती

''भाषा भोजपुरी परिभाषा से पूरी ह
बोले से पहिले एके जानल जरुरी ह
ना गवना पूरी ना सुहागन के चूड़ी ह
सांचि मान त दुश्मन के गरदन पर
चले वाली छूरी ह
कहत घुरान बुरा मति माने केहू
सभ भाषा के उपर हमार भाषा भोजपुरी ह''

भारत के एगो प्रान्त उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के बसन्तपुर गांव के कवि, लोकगीत गायक, ब्यास बीरेन्द्र सिंह घुरान के कहल इ कविता आजु केतना सार्थक बा एहकर अहसास तबे हो सकेला जब भोजपुरिहा भाई लोगन के आपन मातृभाषा भोजपुरी से नेह जागी।

भोजपुरिहा सरल सुभाव के होखेलन, एह बाति के नाजायज फायदा सरकार हमेशा से उठावत आईल बा। आ हमनी के माडर्न बने का फेर में आपन मूल संस्कृति के भुलावल जात बानी। हमनी से एक चौथाई भाषा संविधान का आठवीं सूचि में दर्ज हो गइली स आ हमनी का टुकुर-टुकुर ताकते रह गईलीं जा।

आजु का तारीख में भोजपुरी करीब आठ करोड़ भोजपुरिहन के भाषा बा। भोजपुरिहा लोग बिहार, उत्तर प्रदेश, छतीसगढ़ के एगो बड़हन क्षेत्र में फईलल बाड़न। एकरा अलावे भारत का हर नगर महानगर में भोजपुरिहन के नीमन तायदाद बा। ई लोग हर जगह भोजपुरी के संस्था कायम कके भोजपुरी के अलख जगवले बाड़न। विदेशन में भी भोजपुरिहा भाई पीछेनईखन। मारीशस के आजादी के लड़ाई में भोजपुरी में आजादी के गीत गावल जात रहे। सूरीनाम, त्रिनिडाड, गुयाना में भी भोजपुरी के बड़ा आदर बा। भोजपुरी बोलेवालन के संख्या आ सीमा विस्तार के देखल जाव त भोजपुरी एगो अर्न्तराष्ट्रीय भाषा लेखा लउके लागी।

भोजपुरी भाषा के कुछ अद्भुत विशेषता बा। सही मायने में देखल जाव त इ व्यवसाय आ व्यवहार के भाषा ह। एक मायने में भोजपुरी व्याकरण से जकड़ल नइखे बाकिर साहित्य सिरजन में धेयान जरुर दिहल जाला। इ भाषा के ध्वनि रागात्मक ह।

भोजपुरी भाषा में संस्कृत शब्दन के समावेश बा एकरा अलावे भारत के कईगो भाषा के शब्द आ विदेशी भाषा जइसे अंग्रेजी, फारसी आदि के शब्द भी समाहित बा।

भोजपुरी भाषा में साहित्य के सब विद्या बिराजमान बा। भोजपुरी लोकगाथा, लोकगीत, लोकोक्ति, मुहावरा, कहावत, पहेली से भरपूर बा। वर्तमान में भोजपुरी साहित्य समृध हो गइल बा। भोजपुरी के केतने विद्या आ विषयन पर शोध भइल बा आउर हो रहल बा। केतने विदेशी लोग भोजपुरी के केतने विषय पर शोध करले बाड़न आ करि रहल बाड़न। भोजपुरी के कइगो उत्कृष्ट पत्रिका पत्र प्रकाशित हो रहल बा। केतने शोध ग्रन्थ, उपन्यास, कहानी संग्रह, कविता संग्रह, गीत, गजल संग्रह इहंवा तकले कि कइयों विद्या के भी भोजपुरी में ले खन कार्य चलि रहल बा।

भोजपुरी भाषा के उत्थान खातिर देश में कइगों भोजपुरी के संस्था कार्यरत बा। बिहार के विश्वविद्यालय में एम0ए0 तक के भोजपुरी में पढ़ाई चलि रहल बा। रेडियों, टी0वी0 भी भोजपुरी के अहमियत देता।

भोजपुरिहा सरल स्वभाव के होलन, इनकर कहनी आ करनी में फरक ना होला। ई आपन स्वार्थ के परवाह ना करसु। बेझिझक मूंह पर जवाब देवे में माहिर होलन।

भोजपुरी भाषी के देवी-देवता में शिव, राम, हनुमान, कृष्ण, दुर्गा, काली, शीतलमाई विशेष रूप से पूजल जाला। समूचा बिहार के

लोग जहवां भी बाड़न आ एकरे अलावे पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सा में छठ पूजा व्रत के प्रचलन बा।

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भोजपुरी भाषी तन-मन-धन से लागल रहे लोग। अंग्रेज विद्वान ग्रियर्सन भोजपुरिहा लोगन के उल्लेख ऐह तरे कइले बाड़न ''ई हिन्दुस्तान के लड़ाकू जाति में से एक ह लोग। ई सतर्क आ सक्रिय जाति ह। भोजपुरिहा युद्ध खातिरयुद्ध के प्यार करेलन। ई समूचा भारत में फइलल बाड़न। ए ह जाति के प्रत्येक व्यक्ति कवनो स्वत: आईल सुअवसर से आपन भाग्य बनावे खातिर तइयार रहेले। पूर्वकाल में ई लोग हिन्दुस्तानी सेना में भरती होके मजबूती प्रदान कइले रहन,। साथ हीं 1857 के क्रान्ति में महत्वपूर्ण भागीदारी कइले रहन। लाठी से प्रेम करेवाला, मजबूत हड्डीवाला, लम्बा-तगड़ा भोजपुरिया के हाथ में लाठी लेके घर से दूर खेत में जात देखल जा सकता''।

भोजपुरिया आपन जनम भूमि के प्रति बड़ा श्रधा राखेले, देश-विदेश कहीं होखस आपन सभ्यता ना भूलास। कहीं रहस फगुआ चईता जरूर गइहें, अल्हाउदल के गीत जरूर होई। सोरठी बिरजाभानू गावल जाई। जनेउ, मुण्डन, तिलक, बिआह, छठिआर, ब्रत, तेवहार आ कवनो संस्कार के समय भोजपुरी के गीत गूंज उठेला। भोजपुरिया लोग के तिलक, बिआह, व्रत-त्योहार भा कवनो संस्कार के एगो अलग पहचान बा।

मारिशस, गुयाना, सुरीनाम, त्रिनिडाड में भोजपुरी बोले वाला पुजाला। आपन भोजपुरिया संस्कृति के बचाई, भोजपुरी बोली, भोजपुरी पढ़ी, भोजपुरी लिखी, भोजपुरी गाईं, भोजपुरी के अलख जगाई।

जय भोजपुरी, जय भोजपुरिहा।

डा0 राजेन्द्र भारती
सम्पादक, अंजोरिया.काम
कदम चौराहा, बलिया-277001

कुछु समसामयिक दोहा

मुफलिस

देइ दोहाई देश के, लेके हरि के नाम।
बनि सदस्य सरकार के, लोग कमाता दाम।।

लूटे में सब तेज बा, कहां देश के ज्ञान।
नारा लागत बा इहे, भारत देश महान।।

दीन हीन दोषी बनी, समरथ के ना दोष।
सजा मिली कमजोर के, बलशाली निर्दोष।।

असामाजिक तत्व के, नाहीं बिगड़ी काम।
नीमन नीमन लोग के, होई काम तमाम।।

भाई भाई में कहां, रहल नेह के बात।
कबले मारबि जान से, लागल ईहे घात।।

नीमन जे बनिहें इहां, रोइहें चारू ओर।
लोग सभे ठट्ठा करी, पोछी नाहीं लोर।।

अच्छे के मारी सभे, बिगड़ल बाटे चाल।
जीयल भइल मोहाल बा, अइसन आइल काल।

पढ़ल लिखल रोवत फिरस, गुण्डा बा सरताज।
अन्यायी बा रंग में, आइल कइसन राज।।

सिधुआ जब सीधा रहल, खइलसि सब के लात।
बाहुबली जब से बनल, कइलसि सब के मात।।

साधू, सज्जन, सन्त जन, पावसु अब अपमान।
दुरजन के पूजा मिले, सभे करे सनमान।।

पइसा पइसा सब करे, पइसा पर बा शान।
पइसा पर जब बिकि रहल, मान, जान, ईमान।।

मुफलिस,
चौधरी टोला, डुमरांव, बक्सर, पिन-802119,
बिहार

ललित निबन्ध

नीमिया रे करूवाइन

डा. जनार्दन राय

नीनि आइल निमन ह। जेकरा आंखि से इहां का हटि जाइला ओकर खाइल-पियल, उठल-बइठल, चलल-फिरल, मउज-मस्ती, हंसी-मजाक कुल्हि बिला जाला। अइसन जनाला कि किछु हेरा गइल बा, ओके खोजे में अदीमी रात-दिन एक कइले रहेला।

निकहा दिन से हमरो नीनि उचटि गइल बा बाकिर हम केहू से किछु कहिलां ना। सोची ला कि बूढ़ भइला पर अइसन होखल करेलां। हमरा संगे कवनो अजगुत नइखे भइल। जे साठि-सत्तर से हेले लागेला उ कवनो अनहोनी का इन्तजार में आपन आंखि बिछवले रहेला, रहता देखत रहेला, हित-नात, संगी-साथी, निमन-बाउर सभे किछु एही सभ का माथे रहेला। एसे सोचत-विचारत रहला का बजह से, उहां का आपन आसन जमा ना पाइलां। कबो कबो त अइसन होला कि जब नीनि जनमतुवा का आंखि पर अइला से असकतियाये लागेले त अजिया, महतारी, फुवा लोगन का काफी मसक्कत करे के परेला। उनुकरा मनावन में ओझइती का संगे-संगे गीत गवनई में जेवन लोरी दादी का मुंह से निकसे ले ओकर धुनि, रस, गंध, अजबे सवदगर होला - ''आउ रे निनिया निनरबन से, बबुआ आवेले ननिअउरा से। आउ रे निनिया निनरबन से।''

चइत महीना रहे। कटिया लागल रहे। ताल में मसुरी पाकि के झन-झना गइल रहे। टांड़ पर पाकल रहिला के ढेढ़ी झरत रहे आ ओने दियरी में अबहीं गोहूं चना पाकल त ना रहे बाकिर होरहा हो गइल रहे। एक ओर कटनी आ दुसरकी ओर होरहा का लालच में मन कसमसा के रहि गइल। अकसरूवा जीव दिन भर छिछिअइला से थाकि के एकदम बेबस हो गइल रहे। किछु करे के बेंवत ना रहे। लमहर सीवान में घुमते-घुमत सांझि हो गइल। एतने होला कि आपन खेत, बन बगइचा एक बेरि आंखि में उतरि आवेला। उहो देखेला आअपनहूं देखि के आंखि में जुड़ाई परेला।

थाकल, खेदाइल देहि सांझि खने दुवारे डसावल बंसहट पर परि गइल। अकसरूवा हो खला का नाते कबो-कबो डेरा डांड़ी पर अइसहूं रूकि जाये के परेला ए वजह से हमरा घरनी का कवनो चिन्ता-फिकिर ना रहेले। भइल अइसन कि नीनि ओह दिन अपना गिरफ्त में एह कदर लिहलसि कि किछु सांवा-सुधि ना रहि गइल। अइसन बुझाइल कि-

'निनिया आइल बा सुनरबन से।'

भइया संगे बटवारा कवनो आजु के ना ह। ढेर दिन बीति गइल बाकिर हार आ हंसुली के ले के भउजी संगे जवन उठा-पटक भइल ओकरा से तनी मन में गिरहि त परिये गइल। नीनि ना खुललि। देरी ले सुतल देखि के भइया का मन में किछु अइसन बुझाइल कि, ई काम त कबो के कइले ना ह, मेहरि का कहला में परि के बांटि त जरूर लिहलसि, बाकिर दिल जगहे पर बा। बोलसु त नहिये बाकिर बुचिया, भउजी आ भइया तीनू जाना के फुसुर-फुसुर बोली त सुनाते रहे। चइत के मुंगरी से थुराइल देहिं कवहथ में ना रहे। दरद त रहबे कइल बाकिर देहिं पर परल नीमि के फूल ओकर गंध, बयार का पांखि पर चढ़ के तन-मन के सुहुरा के जवन गुदगुदी पैदा कइलसि ओही दिने बुझाइल कि-

नीमिया रे करूवाइन तबो सीतल छांह
भइया रे बिराना, तबो दहिनु बांह।

टेढ़की नीमि के दतुवन, ओकर खोरठी, पतई, निबावट, लवना, छांह हमनी खातिर केतना आड़ बा, अब तनी-तनी बुझाये लागल ह। सांझि होते पतई का फुनुगी पर बइठल चिरइन के गिरोह, उन्हनी के खोता, तितिली आ कबे-कबे भुलाइल भंवरन के मटरगस्ती केतना नीक लागेले, ई कहे के बाति नइखे। ओह दिन

त हम अपना घरनी का कहला में परि के नीमि का छाती पर जवन टांगी चलवलीं कि उ कटा के बांचि त जरूर गइल बाकिर हमरा छाती में जवन छेद भइल कि आजु ले ना भराइल। हमरा खूबे इयादि बा जब नीमि का पुलुई पर बइठि के उरूवा बोलल- 'उ----उ----उ----उ हमरा घरनी कहली कि इहनी क बोलल नीक ना ह। बाकिर उनुकरा बाति पर बाति बइठावत बंसी साधू कहलनि - 'ई गियानी हवन जा। बोलला के मतलब ई होला कि सजग हो जा, किछु अइसन होई कि टोलमहाल में कवनो दुख, बिपति जरूर आई। ई आवे वाला बेरामी, बिपदा, बाढ़ि सूखा, महामारी के बता के पोढ़ होखे के शक्ति देला।'

नीमि के डाढ़ि उरुवा के ठांव बा। गौरइया के खोंता, आ माता दाई के झुलुहा बा। तएकर पतई दवाई आ टूसा टानिक बा। एकर दतुवन मुंह बसइला से लेके पेट का हर बेरामी के अचूक दवाई बा। इहे ना, एकरा सूखल डाढ़ि पर कोर पतुकी में बनवला भोजन के खाये वाला कइसनो कोढ़ी होखो, एक बरिस में जरूर ठीक हो जाई। एही से एकरा छांव मं बइठि के गांव के गोरी जवन गीति गावेली स ओकर अजबे रस बा। एह छांव में संवसार के संवारे वाली माता दाई खुद बसेरा करेली, एही से भर नौरातन इनिका गाछ से छेड़-छाड़ कइल ठीक ना मानल जाला। गांव गंवई के माई-बहिन जब गावेली स त रोंवा भभरे लागेला-

नीनिया के डाढ़ि मइया!
लावेली झुलुहवा, हो कि, झूलि-झूलि ना।
मइया मोरी, गावेली हो
गीतिया कि, झूलि-झूलि ना।
झूलत-झूलत मइया के
लगली पियसिया, कि बूंद एक ना!
मालिनि पनिया पियाव, मोके बूंद एक ना।

माली-मालिनी मिलि क महामाया का किरिपा से नीमि के सींचत जबन रूप देले बा ओही तरे मातादाई एह संवसार में रसे-बसे वाला हर जीव जंतु के जिये संवरे, सोचेघ्झे के बल, बुधि देले बानी। जरूरत एह बाति के बा कि इंसान के इंसान बुझी जा। भाई के कसाई समझि के काटे के ना ह। भाई-भाई ह। संबंधन का बीच में खटाई डाले के बाति ना होखे के चाहीं। घाम सहि के छांह दिहल आ दुख काटि के सुख बांटल असली धरम ह। सच-सच कहल जाय त आपन करमे असली धरम ह। एह राह-रहनि से जे रही, ओकरा 'करनी' से घरनी आ धरनी दूनो के राहि रसगर हो जाई। संवसार मसान होखे से बंचि जाई। एके बंचावे बदे जे दुइ कदम चली, माई के असली बेटा उहे ह-

'य: प्रीणयेत् सुचरितै: पितरं स पुत्रो'

डा0 जनार्दन राय, नरही, बलिया-2177001

कविता

झरताटे चानी के फुहार

बद्री नारायण तिवारी
'शाण्डिल्य'

डम-डम डमरू बजावता सावनवा,
झरताटे चानी के फुहार।
ओढ़ले अकास चितकबरी चदरिया,
मांथवा पर बन्हले बा धवरी पगरिया,
झरताटे मउसम जटवा से मोतिया,
गेरू रंग कान्हवा पर भिंजली कांवरिया,

पियरी पहिरि बेंग पोखरी के भिंटवा,
मांगतारे मेंहवा के धार।
झरताटे चानी के फुहार।
गोंफिया जनेरवा के फूटता धनहरा,
कजरी के रगिया रोपनिया के पहरा,
डढ़ियन अमवा के झुलुहन में होड़ बाटें,
पंवरत पंखिया पर चोचवन के लहरा,

बनवा में मोरवन के फहरे पतकवा,
बरिसे रूपहला बहार।
झरताटे चानी के फुहार।
अंगना बड़ेरियन से झरना के ताखा,
ओरियन से चूवता सनेहिया के हाखा,
पनिया बहारे धनि जमकल मोरिया,
थाकि-थाकि जाले, नाही रूके रे जुवारवा,

फरकत चोलिया के आड़ले हिलोर,
जाने कबे आयी डोलिया सुतार।
झरताटे चानी के फुहार।
खोंतवा में कोइलरि कागवा के बोलिया,
ठोरवा पर गुदियन के थिरकन-ढोलिया,
चातकी के सूखल नरेटिया जुड़ाइल,
कुंचियन से कवियन के उतरलि खोलिया,

फुटे लागल छने-छने कुसुमी कियरियन,
खुशबू के कुंइयन उभार।
झरताटे चानी के फुहार।
देरि ना मकइयन से छोंड़ि भरि जइहें,
जोन्हरी के बलिया से मइनी अघइहें,
पाकि जब धानवा कुवारवा के घामवा,
पीटि, धरि डेहरी, बंसुरिया बजइहें,

ढोलकी के धुन-मिलि झलिया के झंझना में,
मिटि जाई भितराके खार।
झरताटे चानी के फुहार।

सम्पर्क : द्वारा श्री कमल नयन सिंह,
अवकाश प्राप्त कप्तान, धर्म भवन,
213, राजपूत नेवरी,बलिया-277001

कहानी

'फूलमतिया फूआ'

देवकुमार सिंह

छक...छक, छक...छक करत रेल गाड़ी अपना मंजिल के तरफ तेज गति से बढ़त रहे। भारत के विदेश-नीति, चीन-पाकिस्तान के संगे भारत के सीमा-विवाद, राबड़ी देवी आ मायावती सरकार के मनमौजी शासन जइसन बहुतेरे टापिकन पर गरमागरम बहस कइके लगभग कुल्हि यात्री कड़ेर नीनि में सूति गइल लोग। बाकिर इंजीनियर साहेब के आंखि में तनिकों नीनि ना रहे। आजु फूलमतिया के उनका खूबे इयाद आवत रहे।

फूलमतिया दुई पास तीन फेल रहे। निपटे निरक्षर ना रहे। चिट्ठी-पतरी लिखे-पढ़े जानत रहे। ढेर पढ़ल ना रहला के चलते ओकरा संगे शादी उनका पसन्द ना रहे, जबकि उ बहुते सुघर, लमहर कद-काठी के, अउर घर-गिरहस्थी के काम-काज में निपुन रहे। उनका पहिलके राति में ओकरा संगे बक-झक हो गईल।

''हई लमहर घूघ काहे कढ़ले बाड़ू? कइले पढ़ल हउ..? गूंग हउ का... बोलत काहे नइखु...?'' रमेसर पूछले। ''इ कुल्हि ढोंग हमरा नीक ना लागे। अनपढ़ कहीं का? रमेसर डंटले।

''अनपढ़ ना हईं। दुई पास तीन फेल हईं।'' फूलमतिया कहलस आ निहोरा कइलस ''पलंग पर लेटीं, राउर गोड़ दबा दीहीं।''

''बउचट कहीं का!'' कहिके रमेसर ओह कमरा से बहरी निकलि अइले।

''हइसन बुरबक, भकोल लड़िकी से हमार बिआह काहे कइल हा? हमार जिनिगी तू चउपट कइ दिहल। हम एकरा के ना राखबि।'' बाबूजी के कमरा में घुसते खिसिआइके रमेसर बोललें। मास्टर साहेब भउचका गइले आ बाप के रोआब में डपटले - ''एकरा ले नीमन लइकी आठ-दस गो गांव में खोजला प ना मिली। बहुत रहनदार हिअ। आ तू एकरा के भकोल कहत बाड़?''

''एह गंवार लड़की के हम अपना संगे ना राखब'' कहिके उ ओही राति खा अटइची उठाके घर से निकलि गइले। बाप के लाख समझवलों पर ना मनले। माई त इनकर जनमते मरि गईल रहे। रूई से दूध पिया-पिया के कसहूं जिअवले। अंगरेजी इसकूल में नाम लि खवले। इनका इसकूल के फीस जुटावे खातिर गांव के लड़िकन के टिसनी पढ़ावस, एही से मास्टर साहेब कहाये लगले। नाही त खेती के आलावा जियका के कवनों साधन ना रहे। अपने साग-सातू खाइके, फाटल धोती में पेवन लगा-लगाके काम चलावसु आ इनका के बढ़िया शिक्षा, नीमन भोजन-वस्त्र के प्रबन्ध करसु। आजु उहे रमेसर इनकर तनिको बात ना मनले। ''इ कुल्हि इंगलिस इसकूल में पढ़ावला के नतीजा ह।'' बुदबुदाते कपार पर हाथ रा खके धम्म से बइठि गइले।

रमेसर कम्प्यूटर इंजीनियर रहले। न्यूयार्क के एगो कम्पनी में उनकर नोकरी लागि गईल। आ उ न्यूयार्क चलि गइले। जाये के पहिले अपना बाबूजी आ मेहरारू से मिलहूं ना अइले। खाली एगो कार्ड पर आपन समाचार आ पता ठेकाना लिखि के भेजि दिहले। अमेरिका में नोकरी के समाचार सुनि के मास्टर साहेब खूबे खुश भइले। सतनारायन भगवान के काथा कहववले आ मिठाई बंटले।

कई बरिस बीति गइल, रमेसर रूपया-पइसा के कहो चिट्ठी-पतरी भी ना भेजले। मास्टर साहब कईगो चिट्ठी भेजले बाकिर एको के जब जबाब ना आइल त चिट्ठी लिखल छोड़ि देले। मास्टर साहब बड़ा उदास रहस कि का जाने बबुआ के का हो गईल बा। बेमार त नइ खन आकि कुछ बाउर घटना घटि गईलबा?

मरद के बिना मेहरारू के जिनिगी ऐगो जिन्दा लाश लेखा होला। बाकिर फूलमतिया त

मरद के सुख तनिको ना जनले रहे। ओकरा जवान देह पर मनचला नवही ललचायी निगाह डालस बाकिर उ एतना डीठ रहे कि कवनो जाना के ओकरा से खोंखे के हिम्मत ना पड़े। गली में एकान्ता भेंट भइला पर एगो बदमाश लड़िका ओकरा से कहलस कि हमरा तोहरा संगे सूते के मन करत बा। सुनिके उ ताबड़-तोड़ चप्पल से पीटे लागल ''अपना माई-बहिनिया संगे सूत, उ मू गइल बाड़ी स का? मटिलगना कहीं के।'' सुनिके ढेर लोग जुटि गईल आ ओकर ठीक से परिछावन हो गइल।

बड़ा-बुजुर्ग के बेमार पड़ला पर, बच्चा जने के बेरा गर्भवती औरत के, शादी-बिआह, मुअनी-जिअनी सबमें जेही पूछे-कहे ओकरा सेवा में फूलमतिया हाजिर रहे। लोगन के सेवा में ओकर दिन बीते लागल। नइहर-ससुरा हर जगह सेवा खातिर ओकर पूछ होखे लागल। नइहर के लड़िकन के देखादेखी ससुरो के लड़िका भी ओकरा के फूलमतिया फूआ कहे लगले स।

बिआह के सुख त उ ना जनलस बाकिर सेनूर उ बड़ा टहकारे करे। एक-दू हाली बूढ़ औरत कहली स - ए फूलमतिया दोसर बिआह क ले, ते अभी जवान बाड़ीस आ पता ना उ तोर मरद आई कि ना।'' सुनते ओकर आंखि लाल-लाल हो गइल। बुझाइल कि उनकर मुंह नोचि ली- खबरदार काकी! अइसन बात कबहूं कहबो मति करिह। हम एकजनमिया हईं। हमार मरद इंजीनियर हवें, अइहें चाहे ना अइहें। कवनो घसछिलवा के मेहरारू हम ना हईं। अस्सी हजार महीना पावेले। फेरू-फेरू कहबू त राखि लगाके तोहार जीभि खींचि लेबि। बड़-बूढ़ बाडू एहसे छोड़ि देत बानी।''

कुछ दिन के बाद मास्टर साहब के पता चलल कि रमेसर एगो अमेरिकन लड़की से शादी कर लेले बाड़े। मास्टर साहब एही हूके बीमार पड़ले त खाटी धइ लिहलें आ फेरु उठले ना। फूलमतिया उनकर खूबि जी-जान से सेवा कइलस। अपना मरद के पास चिट्ठी लिखलस बाकिर उ अइले ना। मास्टर साहब निरोग ना भइले आ एक दिन दुनिया से चलि गइलें।

फूलमतिया पर त दु:ख के पहाड़ टूटि गईल बाकिर रोअल-घबड़ाइल ना। दु:ख सहत-सहत ओकर दु:ख सहे के आदत बनि गइल रहे चाहे आंख के लोर- अब सूखि गइल रहे। मांग-चूंग के मास्टर साहब के किरिया करम भोज-भात उ कइलस। लोग कहे ''मास्टर साहेब के इ पतोहु ना असली बेटा हिअ। उ मुंहझउंसा त देखहूं-सुने ना आइल। '' फूलमतिया चट से लोगन के मुंह पर हाथ राखि देवे - ''उनुकरा के बाउर मति बोलीं सभे। शास्तर में लिखल बा कि पति परमेसर होले। उनुका के गाली दिहल-सुनल पाप ह।''

केहू जानत नइखे कि केकरा जिनिगी में कब कवन घटना घटि जाई। जिनिग एगो पहेली ह- अनबूझ पहेली। अमेरिका में मेरी नामके लड़की से शादी कइके रमेसर अपना के दुनिया के सबसे सुखी आदमी बुझत रहले। सुख से अतना सराबोर रहले कि अपना बूढ़ बाप के आ बिअही मेहरारू फूलमतिया के तीस बरिस में एको हाली तनिकों इयाद ना कइले। जइसे उनकर दिमाग कम्प्यूटर होखे आ घर के इयाद वाला इन्टरनेट नम्बर उ भूला गइल होखस। अगर उनका एड्स न भईल रहीत, आ मेरी के दुलत्ती ना खइलें रहीते त उनका अपना देश के इयाद ना आईत। मेरी के बात उनका कांट लेखा अबहियों चुभत रहे -

''हमरा अब तोहार कवनो जरूरत नईखे। कोर्ट से तलाक मंजूर हो गईल बा। दुनो लड़िका अपना वाईफ संगे पहिलही अलगा हो गईल बाड़ेस। इहां के सब धन-सम्पति हमार ह। हमरा एकरे सहारे जिये के बा। हम नौकरानी ना हई कि तोहार सेवा करबि। कुकुर कहीं का !''

''बाकिर हमरा एड्स त तोहरे संग से भईल बा। तू ही हेने-होने कई-कई गो मरद संगे छिछियात फिरत रहलू हा। इ मति भूला कि तहरो एड्स बा।'' - रमेसर उलाहना दिहले।

''हमरा खातिर पईसा बा। इहे हमार हसबैंड ह। एहसे हमार सेवा हो जाई। तू आपन ंख।'' कहके मेरी कांख में बेग लटकवलसि आ घूमे निकलि गईल। रमेसर ओह घरिये मुम्बई खातिर फ्लाइट पकड़ लिहलें। मुम्बई उतरला पर रेलगाड़ी में बइठि के घर के ओर चलि देले। इयाद के हिंडोला में उनका कब नीनि लागी गईल उनका ना बुझाइल।

''आरे भाई, कहां जाये के बा? इ सुरेमनपुर ह।''- एगो यात्री उनका के जगवलस। उ हड़बड़ा के उठले, अटइची उठवले आ उतरि के पयदले चलि दिहले। गांव में ढूकते लोग अकबका के उनका के निहारे लागल। अपना घर के सामने भीड़ि देखिके पूछले - ''ए भाई का बात बा?''

गांव के एगों बूढ़ उनका के चीन्हि गइले ''अरे इ त रमेसरा ह। का ए बबुआ! बड़ नेकी कइल अपना बाप संगे। मुंह में आगियों देबे ना अईल। कतना दु:ख से तोहरा के पलले, पढ़वले, इन्जीनियर बनवले आ तू उनका के ठेंगा देखा देल। धिरकार बा तोहरा लेखा लड़िकन के।''

एगो बूढ़ि औरत कहलस - ''इ तोहार बहुरिया हई। एक महीना से बेमार बाड़ी। अब-तब लागल बा। तुलसी गंगाजल दे द। बाकिर तू का तरब एकरा के। इ त अपने करम से सरग जाई। इ नइहर-ससुरा दुनो गांव के बलुक एह जवार के देवी हीय। एकर दरसन कइके त तू तरि जइब।''

रमेसर तुलसी गंगाजल दिहले। फूलमतिया आंख खोलि के टुकुर-टुकुर कुछ देर देखलस। चेहरा पर हल्का मुस्कान आइल, टप-टप आंखि से कुछ लोर टपकल आ आपन आंखि मूंदि लेलस हमेसा-हमेसा खातिर। पूरा गांव पूक्का फारि के रोये लागल - ''बूढ़, बेसहारा, अपाहिज, रोगी के सेवा अब के करी? बच्चा पैदा करावे खातिर अब औरतन के अस्पताल जाये कि परी।''

ओकर गुन गावत लोग अघात ना रहे। जवारभर मिलिके ओकर सराध कइल। रमेसर के एगो छेदहियो पइसा ना खरचा करे दिहल लोग। सराध के बाद रमेसर आपन अटइची उठाके चले लगले।

''काहो तोहार नईकी माई फेरू इयाद पड़ि गईल का?'' - ललन सिंह गांव के बड़बोलवा गिना ले। उ टोकिए दिहले।

''ना काका अमेरिका छोड़ि देले बानी। बाकिर अब गांव में हमार के बा? हमारा ए ड्स हो गईल बा, कहीं बहरे मरि खपि जाइबि।'' - कहिके रमेसर रोए लगले।

''हेने-होने मुंह मरब, चाहे विदेशी लड़की से विआह करब त इसब रोग-बेयार होखबे करी।'' फूलमतिया गांव जवार में एतना नेकी कइले बिया कि तोहरा सेवा में इहवां कवनों कमी ना होखी। चाहे तहरा एड्स-वोड्स कुछुओं होखे। इहंवे रह।'' - कहिके ललन सिंह उनकर अटइची रखि दिहले।

फूलमतिया आ बाबूजी के उपेक्षा के उनका घोर पछतावा होत रहे। सचहूं, अब उनका बुझाइल कि फूलमतिया उनका ले ढेर पढ़ल-लिखल रहे। आचरण के पढ़ाई में ओकर कवनों सानी ना रहे। कोट के पाकेट से उ चिट्ठी जवना पर उ तनिकों धेयान ना देले रहले निकालि के पढ़ेलगले।

पूजनीय सवामी जी!

चरनों में परनाम,

बाबूजी बेमार बानी। जिए के आस नइखे। जलदी आईं ना त राउर बदनामी होत बा। आई के फेनु चलि जाइबि। हम रोकबि ना। जानत बानी कि एगो उहां रउआ विआह कइले बानीं। एकर हमरा तनिको तकलीफ नइखे। रउरा हमार भगवान हई। जइसे सुखी रउआ रही, हमार ओही में सुख बा। थोरे लिखनी ढेर समझी। रउआ चरण में बारबार परनाम। चिट्ठी पावते चलि आई।

राउर - फूलमतिया।

झर-झर लोर उनका आंखे से झरे लागल। फूलमतिया के बात उनका इयाद पड़ल ''अनपढ़ ना हई, दुई पास तीन फेल हई।'' जिनिगी के असली इसकुल में उ दु पास रहल हिअ आ हम त खउरहियों क्लास नईखी पास भईल, इहे सोचत उ थउसि के बइठि गइले।

देव कुमार सिंह, अंग्रेजी प्रवक्ता, आचार्य जे0बी0 कृपलानी इण्टर कालेज, जमालपुर, बलिया।

लघु कथा

दुख से मुक्ति

लल्लन प्रसाद पाण्डेय

अपना गंवहिया राम नगीना सिंह के घरे बइठके चाह पीअत रहले बिकरमा। काफी नजदीकि बा उनका एह परिवार से। एह से उनका से ओह घर में केहूके परदा ना रहे। ओह दिन सिंह के बड़की पतोहु के उदास देख बिकरमा चाह पियते पूछ बइठले- ''काहे हो कनिया, आज मुंह पर उदासी काहे छवले बा?''

''ना चाचा जी, कवनो खास बाति नइखे। आजुवे गांव से फोन आइल रहल ह कि नानी के गंगा लाभ हो गइल। नीके भइल, बेचारी बड़ा दुख भोगत रहलीह।''- पतोहु कहली।

बिकरमा तनीका चिहात पूछलें - ''काहें, तहार त तीनों मामा लोग त बड़का लोग में गिनाला। जवना मतारी का तीन गो बेटा, तीन गो पतोहु, अन्न-धन से भरल घर, ओकरा कवन दुख?''

पतोहु जवाब दिहली ''-खाये-पीये के त कवनो दुख ना रहल। बड़का दू तल्ला मकान में उ अकेले रहत रहली। मामा लोग त सभे दूर शहर में रहेला। नानीए पर गांव के सम्पत्ति के देखे के भार रहल। तबकी बेर नानी किहां गइल रहनी, त देखनी एकदम थउस गइल बाड़ी। ना आंखि से लउकत बा, ना चलल जात बा। गांवही के एक जानी मेहरारू कबो-कबो आके उनुका के देख जाली। नित करम खातीर देवाल टोअत-टोअत जाली। कय बेर गिरल से देहो घवाहिल हो गइल रहल। आंखि के पपनी तक में ढील छाप लले रहल। बड़ा दुख पावत रहली। अच्छा बा दुख से मुक्ति मिल गइल।''

राम नगीना सिंह के पतोहु के बाति सुनते बिकरमा के होस उड़ गइल। उनुकरो दूनों बेटा अपना मेहरारून के साथे दूर शहर में बाड़न स। साल-दू साल पर आके दस-पांच दिन इहां रह जालन स। साल भर भइल घरनिओ भगवान का घरे चल गइली। अकेले बोड़े। कबहीं उनुकों पोता-पोती के त इहे पांती ना कहे के पड़े कि नीके भइल। बुढ़उ चल गइले। बड़ा दुख पावत रहले। अच्छा बा दुख से मुक्ति मिल गइल।

लल्लन प्रसाद पाण्डेय,
बरडूबी बाजार, डुगरीजान, तिनसुकिया-276601
असम

लेख

आंखि भइल सावन, पुतरिया भइल बदरी

डॉ0 आद्याप्रसाद द्विवेदी

बरिस के बारह महीनन में सावन महीना के आपन एक अलग विशेषता होला। बरखा रितु के असली उछाह सावने महीना में देखे में आवेला। ये महीना मे सगरे आकाश मानों ध रती पर उतरि आवेला। गरमी के ताप से झुलसत धरती सावन के पा निहाल हो उठेली। बादर से भरल अकाश से पानी झमाझम बरसे लागेला। रिमझिम-रिमझिम बरसत पानी जिनगी के उदास क्षणन में जादुई रंग भर देला। सावन प्रकृति के उभरल जवानी के निखार हवे, श्रृंगार हवे। ये महीना में बरखा के फुहार से मतवाला बनल पाखी-पखेरू स्वागत के गीत गावेलें। धरती किसिम-किसिम के फूलन के भीनी-भीनी महक से गमगमा उठेले। प्रकृति रानी अपने सुहाग पे इठला उठेंली। बिजुरी रहि रहि के बादरन के गोद में चिहुंक उठेले। लता-बल्लरी झूमि-झूमि के पेड़न के गलबाहीं देवे लागेलीं। सावन के अइसन मनभावन महीना में जब परत-परत के सजल बादरन के झुंड से सगरे अकाश भरल रहेला, बादरन के गर्जन के ताल पर मोर कुहुक-कुहुक के छमाछम नाचत रहेलें, धरती-रानी के हरिअर अँचरा हवा में लहरात रहेला, उमड़त ताल-तलैया आ इठलात नदी एक समा बांधि दिहले रहेलें, अइसने में तन-मन के हुलसि उठल बहुत सहज हवे। अवर जब तन-मन हुलसि उठेला तब सहज रू प से कंठ से लोकगीत फुटि पड़ेला।

सरस सावन, अंखियन के सुख पहुंचावे वाली हरियरी, रिमझिम फुहार, एकर असली चित्र लोकगीतन में ही देखे के मिलेला। अइसने गीतन मे ऋतुगीत अवर ओमें पावस गीत भा सावनी गीत विशेष रूप से चर्चा करे योग्य हवे। पावस के गीतन में कजरी के गीत सबसे अधिक लोकप्रिय हवे। कजरी लोकगीतन के ए गो शैली हवे जवना में सावन के पुरजोर मस्ती भरल रहेला। एगो कजरी गीत के उदाहरण हम सुना रहल हई जवना में एगो विरहिन नायिका के दर्द के चित्र बा-

सावन मास पिआ घर नाहीं,
मेघवा बरसन लागे ना।
उमड़ि-उमड़ि के बादर बरसे,
सोर मचावे ना।
पापी पपिहा पिउ-पिउ बोले,
जिअरा तरसन लागे ना।
दिन ना चैन, रैन ना निदिया,
सुधि बिसराने ना।
बन में घूमि-घूमि के मोरवा,
नाचे हूक उठावे ना।
केकरा संग हम खेलीं कजरी,
जिअरा कसकन लागे ना।

आकास में घटा चहुं ओर छवले होरवे, झीनी-झीनी फुहार पड़त होखे, बादरन के गरज आ बिजुरी के चमक से डर के स्थिति बनल होखे, अइसने में अकेलापन कांट के समान सालेला। बिरहिन के दिन क चैन आ राति के नींदि हवा हो जाले। अइसन तलफत स्थिति में नायिका कजरी के धुन में अपने मन के पीड़ा व्यक्त करेले-

गरजै बरसै रे बदरिया,
पिया बिनु मोहे ना सोहाय,
आये बदरा स्याम रंग,
रहे गगन बिच छाय,
रैन अंधेरी घिर रही,
जिया नाजुक डर जाय।
चमकै दमक रहे दामिनियां,
रैना कैसे बीती जाय।
चंहक-चंहक रहे चातक,
मंहक-मंहक रहे फूल,
रैन अंधेरी ऐसी गई बात मैं भूल,
पिक, पपीहा औ कोकिला, नीलकंठ-बनमोर,

नाच-नाच कुहकत रहें,
देखि-देखि घन ओर,
ऐसे सावन में सांवरिया,
मोहके कुछु ना सुहाय।

सावन के झिम-झिम फुहारन के बीच पानी से भरल धान के खेतन में रोपाई करत मजदूरिन सभ जब भावविभोर होके कजरी के गीत गावेली त बातावरण में एगो अजबे मदहोशी छा जाले। उन लोगन के गीत संगीत के नियम से बंधल नाहीं होला, ओमे कवनों शास्त्रीयता नाहीं होले, तबहूं ओमें जवन मिठास होले, उ अपने सावन के अवते बाग-बगइचा में झूला पड़ि जाला। लोक जीवन में सावन के झूलन के एगो अलगे रसमयहा होला। मीठ-मीठ नोंक-झोक के बीच में ननद-भौजाइ झूला झूलेलीं। जवने समय आसमान में करिया करिया बादल फिरल होखे, बौछार पड़ रहल होखे, ठंडी बयार के झोंका पेड़न के एक-एक डाढ़ि के गुदगुदा रहल होखे, ओह समय भींगल-भींगल चूनर ओढ़ले झूला झूलत गांव के गोरी सभ बहुत मनभावन लागेली। ऐही पर एकजाना हिन्दी कवि के पंक्ति इयाद पड़त बा-

झूले पर सावन झूल रहा,
शैशव और यौवन झूल रहा।

सावन माह में नई आइल बहू के नैहर भेजले के भी परम्परा हवे। वधू सभ बाट जोहत रहेली कब सावन आवे आ उनके बीरन उनके विदाई करावे आवें। मालूम पड़ेला कि सावन के मस्ती के बहुत खुले रूप में जीये बदे ही ई परम्परा बनल हवे। सावन महीना प्रकृति के यौवन हवे। यौवन हमेशा अल्हड़ होला। ओके नियम कानून अच्छा नाहीं लागेला। पीहर में नियम-कानून से बंधल जिनगी रहेले लेकिन नैहर में स्वच्छन्द जिनगी रहेले। एही स्वच्छन्द जिनगी के आनन्द लेवे खातिर सावन में बहु के नईहर में रहले के परम्परा बनल हवे। लेकिन एह परम्परा से अलग हटि के ए गो लोकगीत में नायिका अपने ननद से कहि रहल बा-

भइया मोर अइहें अनवइया,
संवनवा में ना जइबों ननदी।

इ नायिका सावन के आनन्द अपने पिय-संगम के साथे बितावल चाहति बा। अइसहीं एगो लोकगीत में संजोगिनी नायिका के वर्णन बा जवन सावन के झिमिर-झिमिर रात में विह्वल बनल अपने पिय के संगे हिंडोला पर किलोल करत गा रहलि बा-

सखि हे! पडे सावन के झींसी,
पिया संग खेलब पचीसी ना।

एह लोकगीत के कड़ी में संजोगिनी नायिका के केतना टंहकार भरल प्रसंग बा। कइसन रसमय होत होई उ समय जब कवनों नवही अपने पिय के संगे बतरस करत हंसी-गुदगुदी में पचीसी के खेल खेलति होई।

संजोगिन आ विरहिनि के ओर से हटि के अगर खुलल रूप से सावन के बखान लोकगीत में देखल जाव त उ कम मोहक नाहीं हवे। दे खल जाव एगो लोकगीत में कतना रोचक ढंग से सावन के हर पक्ष के केतना सरस आ नीम्मन बरनन कइल गइल बा-

फूले बन फुलवा, बोलन लागे मोरवा,
अब रे मयनवा ना।
मैना छवले बाटे सगरों संवनवां, अब रे०।
घिरले बदरिया, करे अंधियरिया, अब रे०।
मैना झुरझुर चलल पवनवां, अब रे०।
झिल्ली झनकारे, बनपपिहा पुकारे, अब रे०।
मैना बहे लागी नदिया होय उतनवां, अब रे०।
सजेली गुजरिया, गावेली कजरिआ, अब रे०।
मैना मिलि जुलि झुलेले झुलनवां, अब रे०।
जेकरा सजना परदेस बसेलें, अब रे०।
मैना अंसुवा बहावे दिन रेनकं, अब रे०।

डा0 आद्याप्रसाद द्विवेदी,
टैगोर नगर, सिविल लाइन, बलिया-277001